13वीं एवं 16वीं शताब्दी ईस्वी के राम : एक अध्ययन

डॉ0 देवी

प्रकाश त्रिपाठी

राम कथा शाश्वत है, संस्कृत वाङ्गमय में भी कहा गया है कि मनुष्य को राम इत्यादि की तरह आचरण करना चाहिए, रावण इत्यादि की तरह नहीं। रावण ज्ञानी था, चारों वेदों को जानता था, लेकिन उसने जब आचार का परित्याग किया तो बुरा हो गया। जो आचार हीन व्यक्ति हैं उसे वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

एक ही नायक के विषय में जब अलग–अलग विद्वान लिखते हैं तो उनमें कुछ अन्तर आ ही जाता है। इतिहास की विषयवस्तु के रूप में ऐतिहासिक तथ्य महत्वपूर्ण हैं। जिनकी व्याख्या इतिहासकार अपनी समसामयिक आवश्यकता तथा व्यक्तिगत क्षमता के अनुरूप करता है। युग, काल, देश, भाषा, रीति, परम्परा तथा इतिहासकार के अपने स्वयं के परिवेश उसे प्रभावित करते हैं। इतिहास के आधार पर अगर साहित्य का महान वृक्ष खड़ा होता है तो साहित्य की छाया में इतिहास अनंत काल तक सुरक्षित रहता है।

उपरोक्त अन्तर को उत्तर–दक्षिण का अंतर या 13वीं एवं 16वीं शताब्दी ई. का अंतर कह सकते हैं, किन्तु यह अन्तर बाह्य है। अंतरमन में रामायण के पात्रों का चरित्र सभी में रचा बसा है। रामायण के पात्रों के नाम पर आधारित नाम, जन सामान्य में देखें जा सकते हैं।